लखो री आली ! लाली जु कि झुलन बहार ।
झुलवत लाल रूप जनु, लाली, झूलत जनु सिंगार ।
हिय फूली कालिंदी, ता तट, फूली कदमनि डार ।
ता पर लता-बेलि बहु फूली, उरझी तरुवर झार ।
रंग बिरंगे विविध सुफूलनि, रेशम डोर सँवार ।
किय सोरह श्रृंगार फुलन को, राजति भानुदुलार ।
झुकि झुकि झोंटे देत लाल जू, करन चहत दृग चार ।
मुरि मुरि मृद मुसकाय लाड़ली, करति नैन सों वार ।
लाल अलापत तान, लाड़ली, गावति मेघ मलार ।
अति द्रुत झोंटे दियो लाल जब, डरपीं हिय सुकुमार ।
कह्यो लाड़ली 'करु न लँगरई, नटखट नंदकुमार' ।
'हौं 'कृपालु' तब ही मानौं जब, सँग झुलवो रिझवार' ॥

भावार्थ - एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि अरी सखी ! आज वृषभानुदुलारी की झूले की बहार तो देख ! लाल जी मूर्तिमान रूप के समान झूला झुला रहे हैं तथा लाड़िली जी साक्षात् श्रृंगार के समान झुल रहीं हैं । श्री यमुना जी आनंद में फूली नहीं समा रही हैं तथा यमुना के किनारे कदंब का वृक्ष भी फूलों से सुशोभित हो रहा है एवं उस कदंब के वृक्ष पूर्णतया लिपटी हुई अनेक रंग के फूलों से सजाई हुई झूले की रशमी रस्सी शोभायमान हो रही है । झूले के ऊपर श्री राधिका जी फूलों के सोलहों श्रृंगार से युक्त होकर विराजमान हैं । लाल जी झुक-झुककर झूमते हुए पीछे से झूले में झोंटे दे रहे हैं एवं किशोरी जी की आँखों से आँखें मिलाने का प्रयत्न भी कर रहे हैं । किशोरी जी भी मुड़-मुड़कर पीछे की ओर देखती हुई श्यामसुन्दर पर कटाक्षपात् कर रही हैं । लाल जी तान आलाप लेते हैं एवं लाड़ली जी मेघमल्हार राग से गाना गाती हैं ।कुछ देर बाद लाल जी ज्यों ही जोरों से झोंटे दिये तब लाड़िली जी परम सुकुमार होने के कारण, डर गयीं । किशोरी जी ने लाल जी से कहा, 'अरे नटखट ! ऊधम न करो ' । 'कृपालु' कहते हैं कि तब लाल जी ने कहा कि 'मैं यह ऊधम तभी बंद करूँगा जब तुम मुझे भी अपने पास बिठाकर झूलने की आज्ञा प्रदान करोगी ' ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिषत्